P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-5* January- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आधुनिक हिन्दी कविता में भारतीय लोक संस्कार

Indian Folk Rites In Modern Hindi Poetry

Paper Submission: 05/01/2020, Date of Acceptance: 15/01/2020, Date of Publication: 18/01/2020

ऋषिपाल
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता
महाविद्यालय, कौल, कैथल
हरियाणा, भारत

सारांश

भारतीय लोक जीवन में तकनीक एवं विज्ञान की चकाचौंध के उपरान्त भी ऐसा विश्वास है कि मानव का जन्म उसके पूर्व जन्म के संस्कारों के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है। इस चिन्तन पर वर्तमान दौर में मनुष्य बेशक विश्वास न करें, लेकिन भारतीय जीवन का यदि हम सूक्ष्म अध्ययन करें, तो वैज्ञानिक चकाचौंध व आधुनिक नागरिक पद्धति के आचरण में भी मानव के पूर्व के संस्कारों की छाप किसी–न–किसी रूप में दिखाई दे जाती है। भारतीय संस्कृति संस्कारों पर आधारित है। भारतीय लोक जीवन में मानव की श्रेष्ठता का आधार संस्कार ही हैं। पृथ्वी पर बहुत संख्या में जीव प्राणी जीवन जीते हैं। लेकिन वे मानव की तरह सुसंस्कारित नहीं हैं। बाजारवादी संस्कृति व वैश्वीकरण के दौर में भले ही हमें मानवता में कुछ संस्कारों की कमी झलकती है, लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं कि भारतीय समाज संस्कार विहीन हो गया है। भारतीय लोक जीवन में आज भी हमारी वैदिक संस्कृति जीवित दिखाई देती है। संस्कार जीवन की कड़ी है, इनके बगैर मानव शरीर की गतिशीलता किसी भी प्रकार से संचरित नहीं हो सकती। भारतीय विद्वानों का मत है कि जन्म से मृत्यु तक मानव सोलह संस्कारों के माध्यम से गुजरता है।[1] इन संस्कारों में गर्भाधान, जन्म, विवाह, अन्त्येष्टि भारतीय लोक जीवन के मुख्य संस्कार माने जाते हैं।

Even after the glare of scientific and technological advancement in India, there is a belief that a human being is born as a result of the rites of his previous birth. In this current scenario, humans do not believe in this thinking, but if we make a subtle study of Indian life, then in the form of scientific and modern civilian practice, the impression of the past rites of human beings would be seen in some form or the other. Indian culture is based on rites. Rites are the basis of human superiority in Indian mythology. A large number of living beings live on Earth. But they lack rationality of the humans. In the era of capitalist culture and globalization, even though we lack some rituals in our society, it does not mean that Indian society has become devoid of sanskars. Even today our Vedic culture appears alive in Indian folk life. Without them, there is a link between the sacrament and the mobility of the human body, which cannot be transmitted in any way. Indian scholars are of the opinion that from birth to death, human beings pass through sixteen rites. In these rites, conception, birth, marriage, funeral are considered to be the main rites of Indian folk life.

मुख्य शब्द : संस्कार, त्याग, संयम, प्रेम, उदारता, धर्मनिष्ठता।
Sacrament, Sacrifice, Restraint, Love, Generosity, Piety.

प्रस्तावना

संस्कार का अर्थ – शुद्ध करना, साफ करना, चमकाना और भीतरी रूप को प्रकाशित करना होता है। भारतीय लोक जीवन में संस्कारों का मुख्य उद्देश्य मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धता से है। हम कह सकते हैं कि फूलों में जो स्थान सुगन्ध का है, फलों में जो स्थान मिठास का है, भोजन में जो स्थान स्वाद का है, वही स्थान मनुष्य के जीवन में संस्कारों का है। सुसंस्कार ही मानव को पाप, अज्ञान और अधर्म से दूर रखकर उन्हें आचार–विचार, कर्मनिष्ठता और ज्ञान–विज्ञान से संयुक्त करते हैं। इससे मनुष्य में सद्बुद्धि बनी रहती है और उसके हृदय में त्याग, संयम, प्रेम, उदारता, धर्मनिष्ठता, कर्त्तव्यपरायणता आदि उच्च भावनाएँ आती हैं।[2] यह प्रायः निश्चित है कि संस्कारवान व्यक्ति धार्मिक प्रकृति का होगा और धर्म कर्म को मानने, जानने वाला होगा। ऐसे व्यक्ति का प्रत्येक कदम व निर्णय सन्मार्ग की ओर जाता है। भारतीय लोक जीवन में या यूँ

कहें कि हिन्दू जीवन में संस्कारों का बहुत अधिक महत्त्व है। भारतीय पुराणों में अनेक संस्कारों का उल्लेख मिलता है, लेकिन उनमें मुख्य तथा आवश्यक षोडश संस्कार माने गये हैं। महर्षि व्यास द्वारा प्रतिपादित प्रमुख षोडश संस्कार इस प्रकार हैं[3] –

1. गर्भाधान,
2. पुंसवन,
3. सीमन्तोन्नयन,
4. जातकर्म,
5. नामकरण,
6. निष्क्रमण,
7. अन्नप्राशन,
8. वपन क्रिया,
9. कर्णवेध,
10. उपनयन,
11. वेदारम्भ,
12. गोदान,
13. समावर्तन,
14. विवाह,
15. परिग्रह,
16. अन्त्येष्टि।

भारतीय लोक जीवन में जन्म से पूर्व गर्भाधान के नौ महीनों की क्रियाए जन्म–संस्कार के अन्तर्गत आती हैं जैसे कुछ लोगों के सातवें मास में 'साध' पूजन होता है। बालक के जन्म लेने के छठे दिन गृह शुचि और माँ (जो बच्चे को जन्म देती है) के स्नान का संस्कार होता है, एवं रात को 'छठी पूजन' होता है। जन्म के दसवें दिन 'नामकरण–संस्कार' होता है, कुछ वर्षों के उपरान्त 'मुंडन–संस्कार' किया जाता है। षोडश संस्कारों में मुख्य विवाह संस्कार माना गया है। समाज में सभी लोग इस संस्कार को उत्साह के साथ मनाते हैं। भारतीय समाज में ऐसी मान्यता है कि शादी के बगैर मानव का जीवन अपूर्ण है। इसी कारण वह किसी यज्ञ आदि का विधान भी नहीं कर सकता। विवाह संस्कार के बाद 'गौना' होता है। मानव जीवन का अन्तिम संस्कार 'अन्त्येष्टि' संस्कार है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य आधुनिक हिन्दी कविता में भारतीय लोक संस्कारों की महत्ता का अध्ययन करना है।

विषय विस्तार

भारतीय लोक जीवन में गर्भाधान 'संस्कार' को सुयोग्य सन्तान पैदा करने के लिए माना गया है। पति–पत्नी, देवी–देवताओं से योग्य एवं सुन्दर सन्तान की प्रार्थना करते हैं। गर्भाधान संस्कार के सम्पादन के लिए भारतीय लोक जीवन में स्मृतिकारों ने समय व दिन निर्धारित किया था जिसका पालन अति आवश्यक था। पुंसवन संस्कार से अभिप्राय पुत्र प्राप्ति के लिए माना गया है। भारतीय समाज में धारणा है कि पुत्र पिण्ड दान आदि की क्रियाएं करता है। इसलिए बेटे का अपने पिता को स्वर्ग में जाने के लिए कर्म काण्ड करने के लिए परिवार में होना आवश्यक है। इसीलिए पुत्र का परिवार में जन्म परम आवश्यक माना गया है। सीमन्तोन्नयन संस्कार का अभिप्राय गर्भवती स्त्री की रक्षा करना था। जात कर्म संस्कार में पुत्र की उत्पत्ति हो जाने पर उसके जन्म से सम्बन्धित अन्य लौकिक क्रिया–कलापों का सम्पादन करना था। आजकल पुत्र की उत्पत्ति के बाद छठी और बरही करने की जो प्रथा है वह इसी के अन्तर्गत आती है।[4]

स्त्री बच्चे को नौ माह तक अपने गर्भ में पालती है। इस समय उसे सन्तान के लिए शारीरिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। बच्चा पैदा करते समय उसे प्रसव पीड़ा को झेलना पड़ता है। 'सूरज एक सलीब' कविता में कवि इसको मार्मिक ढंग से व्यक्त करते हैं – 'बुधिया' की प्रसव पीड़ा, मेरे शरीर के भीतर तक घुस गयी, और 'धीस' और 'माधव' अलाव में भून–भून कर आलू खाते रहे।[5] गर्भवती महिला की तबीयत ठीक नहीं रहती। वह अनेकों बार घबराती भी है और उबकाई भी लेती है। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। सहसा पत्नी बोली उनसे – मेरी तबीयत घबराती है। प्रसव वेदना शुरू हो गई, रह–रह उबकाई आती हैं। दाई बहुत दूर है घर से जल्दी नाथ! उपाय करो कुछ। साहस से गांधी यह बोले, किसी बात से नहीं डरो कुछ।[6]

स्त्री गर्भावस्था में बच्चे को नौ महीने नौ दिन और नौ घण्टों तक गर्भ में रखती है ऐसा माना जाता है। इसका एक उदाहरण कविता में मिलता है – औरत के गर्भ में नौ महीने तक, खौलते हुए देश दुनिया कोई नाम नहीं देती।[7] भारतीय लोक जीवन में मात्र विश्वास ही नहीं बल्कि सच्चाई है कि जब स्त्री अपने बच्चे को जन्म देती है तब गर्भ से बाहर आते ही बच्चा रोता है। कवि द्वारा 'सत्यज' कविता में इसका उल्लेख मिलता है – मैं फूट पड़ा, अवरोध–हरे झरने–सा, शिशु गर्भाशय से बाहर आ, ज्यों रोए।[8]

'जन्म संस्कार' बच्चे के जन्म लेने के उपरान्त मनाया जाता है। भारतीय लोक जीवन में 'जन्म संस्कार' का प्रमुख स्थान है। सदियों से भारतीय समाज की विडम्बना यह रही है कि बेटे के जन्म पर खुशी मनाई जाती है, मिठाई बांटी जाती है, गीत गाए जाते हैं, लेकिन बेटी के जन्म के उपरान्त यह सब नहीं होता। भारतीय लोक जीवन में बेटे के जन्म पर सोहर गीत प्रसन्नता एवं खुशी के सूचक माने जाते हैं। पुत्र के जन्म के उपरान्त जहां बाप रुपये–पैसे लुटाता है वहीं माँ भी ब्राह्मणों को दान देते नहीं थकती। वह भिखारियों को भिक्षा भी खुशी–खुशी देती है। लेकिन दुःख इस बात का है कि पुत्री के जन्म के बाद घर में दुख की लहर दौड़ जाती है। सन्नाटा–सा छा जाता है। भारतीय लोक जीवन में सोहरों की परम्परा अत्यन्त पुरानी है। इनमें भी भोजपुरी सोहरों की भांति दोहद, प्रसव पीड़ा, आनन्द और उदाह का वर्णन उपलब्ध होता है, परन्तु श्रृंगार रस की अपेक्षा इनके करूणा की मात्रा का पुट अधिक है। मैथिली सोहर तुकान्त और भिन्न तुकान्त दोनों प्रकार के मिलते हैं। सोहर सुखान्त होता है और इसमें आशा की निर्झरिणी टेढ़ी नागिन सी बल खाती बिजली सी दौड़ती चली गई है।''[9]

भारतीय लोक जीवन में पुत्र के जन्म के पावन अवसर पर उमंग, उत्साह से खुशियाँ मनाई जाती हैं। घर में दिवाली मनती है। दीप जलाए जाते हैं। मिठाइयाँ बंटती हैं। बेटे का घर में पैदा होना शुभ माना जाता है। लोक विश्वास यह भी है कि मानव के पुण्य व अच्छे कर्मों

का फल उसे पुत्र प्राप्ति के रूप में मिलता है। इसका उदाहरण 'मानवेन्द्र' में दिखाई पड़ता है – माँ स्वरूप रानी ने पाया – लाल जवाहर प्यारा। कोमल कोमल गोरा गोरा शिशु गुलाब सा न्यारा।। उस दिन मोती लाल नेहरू – पुण्य फल से फूले। उस दिन अगणित दीप जले थे, घर आये पथ भूले।[10] बेटे के जन्म की खुशी में घर में दीप जलते हैं – पुण्य फले, वरदान फले, जन्मोत्सव के दीप जले, गूंजी पी पी रोने की, गूंजी लोटी सोने की।[11]

भारतीय लोक जीवन में पुत्र रत्न की प्राप्ति के उपरान्त देवी देवताओं के साथ–साथ कुओं को भी पूजा जाता है – कुआं पूज धरती माँ बोली, लाल हुआ है मेरे, देव लोक ने कहा है धरा से, धन्य भाग्य है तेरे।[12] भारतीय समाज में विवाह संस्कार सबसे महत्त्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। अनेक धर्म शास्त्रियों ने आठ प्रकार के विवाहों का विधान माना है। इनमें आरम्भ के चार प्रकार प्रशस्त माने जाते हैं व बाद के चार प्रकार गृहणीय हैं। भारतीय समाज में पहला आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम था जो पच्चीस वर्षों तक माना जाता था। इसके बाद ही किसी युवक की शादी होती थी। वर्तमान समाज में कम आयु के लड़के और लड़कियों का विवाह अपराध घोषित किया गया है, परन्तु इस कानून का पालन तोड़ने में ही अधिक किया जाता है।[13] प्राचीन काल से ही विवाह का समय निर्धारित होने के निश्चित समय पर बेटी के घर पिता द्वारा मण्डप तैयार किया जाता है। घर में चारों कोनों में आम के पत्तों व फूलों से रस्सी को बांध कर आंगन को सजाया जाता है। इसके नीचे वर–वधू को बैठा कर विवाह के बन्धन की रस्में पूरी की जाती हैं – मण्डप में है वर–वधू सजे हुए, हर कोई आशीष उन्हें दे रहा, आज बेटी बन वधू घर आ गई। नाव पितृ उर सप्तम में खे रहा।[14]

भारतीय लोक जीवन में विवाह के पावन अवसर पर पण्डितों द्वारा विधि विधान से वर–वधू को शादी के बन्धन में बांधा जाता है। ब्राह्मण मन्त्र बोलकर एक दूसरे से वचन भरता है – ऊँचे स्वर से मन्त्र बोलकर, पण्डित ने फेरे लिखाये। अग्नि ज्योति के आगे उनको, जीवन के दर्शन करवाये।। वर ने वचन दिये कन्या को, 'बा' ने वर वचन भर लिये। दोनों हृदय एक स्वर में थे, दिल के कौल करार कर लिये।[15]

विवाह के पावन अवसर पर वर पक्ष वधू पक्ष के घर बारात लेकर जाता है। भारतीय लोक जीवन में यह प्रथा आरम्भ से चली आ रही है। ब्याह के पावन अवसर पर पटाखे, आतिशबाजियाँ चलाई जाती हैं। बैंड बाजे व शहनाई की गूंज सुनाई देती है। पद्मा सुधी ने अपनी कविता में इस धारणा की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की है – अकेले मत आना, बारात लेके आना। देखो, बादल के मन में, जब उमड़ता, धरती के लिए प्यार, संयमित कर अपने को, खड़ा वह रहता और करने लगता इन्तजारी बारात छोड़ आया जो पीछे, बादल, अनन्त बादल वे आने लगते, बिजली की छुटने लगती फिर आतिशबाजी, दादुर बजाने लगते। विचित्र वीणा, पपीहा बजाने लगता शहनाई, मोर बन जाता, स्त्री बनावटी, सात फूलों की माला ले, जब हो जाता तैयार बादल, धरती में करने को ब्याह।[16]

भारतीय लोक जीवन में पिता शादी के अवसर पर अपनी बेटी का हाथ उसके होने वाले पति को देकर कन्यादान करता है। सदा–सदा के लिए वधू अपने पिता का घर व्यवहारिक रूप से तज देती है – पिता गृह उस क्षण जाता छूट, किशोरी का होता जब ब्याह। उसका सब कुछ पति के साथ, नेह का आदि–न–अन्त–न–थाह।[17]

भारतीय लोक जीवन में मृत्यु संस्कार मानव जीवन का अन्तिम संस्कार है। मृत्यु से पूर्व किसी भी नर–नारी को नीचे धरती पर लेटा दिया जाता है जब यह मान लिया जाता है कि अब वह अन्तिम सांस ले रहा है या मृत्यु हो चुकी है। इसे भारतीय समाज में 'मुँह सेज देना' भी कहते हैं। ऐसे समय पर मृतक के मुँह मे गंगा जल या तुलसी जल डालना पवित्र माना जाता है। कुछ लोग ऐसे वक्त पर मृतक के हाथ में गाय की पूंछ स्पर्श कराकर 'गोदान' भी कराते हैं। भारतीय समाज में परिवार का बड़ा बेटा दाह संस्कार करने का अधिकारी माना जाता है। चिता में चन्दन की लकड़ी या आम अथवा बेल वृक्ष की लकड़ी अच्छी मानी जाती है। चिता को अग्नि देने वाले को 'दाही' कहते हैं। इस दाही को अनेक नियमों का पालन करना पड़ता है। दस दिन तक हजामत न बनवाना, शरीर में तेल न लगाना, जूता नहीं पहनना आदि। दसवें दिन दशाह कर्म कर घर के सभी सदस्य मुण्डन कराते हैं। बारहवें दिन द्वादशह को ब्राह्मणों को भोज देकर श्राद्ध कर्म की समाप्ति हो जाती है।[18] मनुष्य की मौत के उपरान्त मृतक आत्मा की शान्ति के लिए उसे श्रद्धांजलियाँ दी जाती हैं – आओ बापू के दर्शन कर जाओ, चरणों में श्रद्धांजलियाँ अर्पण कर जाओ।[19]

भारतीय लोक जीवन में सुहागिन स्त्री की मौत के बाद उसे शृंगार करके ही दाह संस्कार के लिए श्मशान ले जाते हैं। प्राचीन लोक विश्वासों अनुसार विवाहिता को सुहाग का प्रतीक कुंकुम मस्तक पर लगाकर उसके शरीर में रंग–बिरंगे वस्त्र पहना कर या ढक कर उसे दाह कर्म के लिए ले जाना उचित माना जाता है – ''यह महीन मलमल की सारी, उसके नीचे नरम गुलाबी चोली सेचे कसे हुए, पीनोन्नत स्तन, यह कुंकुम अक्षत से वर्चित। माथा यह न, किसी सुहागिन की अर्थी पर, बड़ी–बड़ी चीलों के मानो तीक्ष्ण चक्षु, ये बसे हुए पर।[20]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि भारतीय लोक जीवन में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। मानव के जीवन में संस्कार जन्म से ही आ जाते हैं। वास्तव में समस्त संस्कार मनुष्य के भले व विकास के लिए किए जाने वाले शास्त्र सम्मत व समाज द्वारा स्वीकृत कृत्य होते हैं। गर्भाधारण संस्कार उत्तम सन्तान के लिए किया जाता है। स्त्री पुरुष का गर्भ धारण करती है और पुरुष उस गर्भ की रक्षा करता है। गर्भवती स्त्री को ग्रहण नहीं देखना चाहिए, ऐसी धारणा समाज में व्याप्त है। गर्भवती स्त्री के लिए बर्रे भी त्याज्य हैं। जिस कक्ष में वह सन्तान उत्पन्न करती है उसे 'सडरि' कहते हैं। विवाह संस्कार के लिए भी भारतीय समाज में अलग–अलग रीति–रिवाज और मान्यताएँ व्याप्त हैं। विवाह से पूर्व वर–वधू की कुण्डली भी मिलाई जाती है। विवाह से पूर्व वर को तिलक किया जाता है। फिर

निर्धारित दिन शादी कर दी जाती है। मृत्यु संस्कार सोलह संस्कारों में अन्तिम संस्कार होता है। मृत्यु के दसवें दिन दशाह कर्म कर घर के सभी सदस्य मुण्डन कराते हैं भारतीय प्रथानुसार बारहवें दिन द्वादशाह को ब्राह्मणों को भोज देकर श्राद्ध कर्म की समाप्ति हो जाती है। संक्षेप मे हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में संस्कार हमेशा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के अस्तित्व को बनाये रखने में अपनी भूमिका अदा करते रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *माया रानी टंडन, अष्टछाप काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन से उद्धृत, पृ॰ 159*
2. *संस्कारों का महत्त्व, संस्कार अंक, जनवरी सन् 2006 ई॰, गीता प्रैस, गोरखपुर, पृ॰ 236*
3. *व्यास स्मृति, पृ॰ 13–14*
4. *कृष्ण देव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा पृ॰ 159*
5. *शैलेश जैदी, सूरज एक सलीब, पृ॰ 31*
6. *रघुवीर शरण 'मित्र' जननायक, पृ॰ 148*
7. *मुनि रूप चन्द्र, तलाश एक सूरज की, पृ॰ 21*
8. *डॉ॰ ओम प्रकाश भाटिया 'अराज', सत्यज, पृ॰ 53*
9. *कृष्ण देव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृ॰ 267*
10. *रघुवीर शरण मित्र, मानवेन्द्र, पृ॰ 25*
11. *वही, पृ॰ 25*
12. *वही, पृ॰ 26*
13. *कृष्ण देव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृ॰ 162*
14. *डॉ॰ लक्ष्मण सिंह, घटते बढ़ते हाशिये, पृ॰ 23*
15. *रघुवीर शरण 'मित्र' जननायक, पृ॰ 38*
16. *पद्मा सुधि, रमी, पृ॰ 31*
17. *डॉ॰ लक्ष्मण सिंह, चन्द्रिका, पृ॰ 92*
18. *कृष्ण देव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृ॰ 164*
19. *हरिवंश राय बच्चन, सोपान, पृ॰ 228*
20. *प्रभाकर माचवे, तार सप्तक, पृ॰ 216*
21. *कृष्ण देव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा पृ॰ 300*
22. *पूरण मुद्गल, अश्व लौट आयेगा, पृ॰ 11*
23. *डॉ॰ ओम प्रकाश भाटिया 'अराज' सत्यज, पृ॰ 91*
24. *अमित, रंग बदलते हुए, पृ॰ 14*